सूर राजवंश, जिसे सूर इंटररेग्नम के नाम से भी जाना जाता है, एक अल्पकालिक अफगान राजवंश था जिसने 1540 से 1555 तक उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों पर शासन किया। यह राजवंश शेर शाह सूरी के हाथों दूसरे मुगल सम्राट हुमायूँ की हार के बाद उभरा। 1540 में कन्नौज के युद्ध में। सूर राजवंश के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. संस्थापक: सूर राजवंश की स्थापना शेरशाह सूरी ने की थी, जिसका मूल नाम फरीद खान था। वह बिहार का एक अफगान कुलीन था और एक सैन्य कमांडर के रूप में प्रमुखता से उभरा।

2. शेरशाह सूरी: शेरशाह सूरी एक कुशल सैन्य रणनीतिकार और प्रशासक थे। अपने संक्षिप्त शासन के दौरान, उन्होंने सुधारों की एक श्रृंखला लागू की, जिसमें एक मानकीकृत चांदी के सिक्के की शुरुआत, एक सुव्यवस्थित सड़क नेटवर्क (जिसे ग्रैंड ट्रंक रोड के रूप में जाना जाता है) का निर्माण और एक कुशल प्रशासनिक प्रणाली की स्थापना शामिल थी।

3. हुमायूँ का निर्वासन: 1540 में कन्नौज की लड़ाई में हार के बाद, मुगल सम्राट हुमायूँ निर्वासन में चले गए और फारस में सफ़वीद शासक शाह तहमास प्रथम के दरबार में शरण मांगी। मुगल सिंहासन को पुनः प्राप्त करने के लिए भारत लौटने से पहले उन्होंने कई साल वहां बिताए।

4. शेरशाह की मृत्यु: शेर शाह सूरी की मृत्यु 1545 में हुई और उनके पुत्र इस्लाम शाह सूरी ने उनका उत्तराधिकारी बनाया, जिन्होंने 1554 में अपनी मृत्यु तक शासन किया।

5. गिरावट और विखंडन: इस्लाम शाह की मृत्यु के बाद, सूर राजवंश को आंतरिक संघर्ष और विखंडन का सामना करना पड़ा। कई दावेदारों ने सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा की, जिससे उत्तरी भारत पर राजवंश की पकड़ कमजोर हो गई।

6. हुमायूँ की वापसी: सूर राजवंश के भीतर आंतरिक संघर्ष का लाभ उठाते हुए, हुमायूँ 1555 में भारत लौट आया और दिल्ली के सिंहासन पर पुनः अधिकार कर लिया।

7. राजवंश का अंत: हुमायूँ की वापसी से सूर वंश का अंत हो गया। 1555 में सरहिंद की लड़ाई में अंतिम सूर शासक सिकंदर सूरी पर उनकी जीत ने उत्तरी भारत में मुगल शासन की बहाली को चिह्नित किया।

8. विरासत: अपने संक्षिप्त शासन के बावजूद, सूर राजवंश ने भारत पर महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा। शेरशाह के प्रशासनिक सुधारों, विशेष रूप से उसके सड़क नेटवर्क और मुद्रा प्रणाली का बाद के मुगल और औपनिवेशिक प्रशासन पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

9. वास्तुकला: सूर राजवंश ने शेरशाह के शासनकाल के दौरान निर्मित दिल्ली में पुराना किला (पुराना किला) जैसी उल्लेखनीय संरचनाओं के साथ वास्तुकला में योगदान दिया।

10. अफगान कुलीनता का एकीकरण: राजवंश के शासन में अफगान कुलीन वर्ग का भारत के प्रशासनिक और सांस्कृतिक ताने-बाने में एकीकरण हुआ, जिसका क्षेत्र के इतिहास पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

सूर राजवंश के शासन ने मुग़ल साम्राज्य के पहले और दूसरे चरण के बीच एक सेतु का काम किया। हालाँकि यह अपेक्षाकृत अल्पकालिक था, इसने उत्तरी भारत में प्रशासनिक प्रथाओं और बुनियादी ढांचे को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, एक ऐसी विरासत छोड़ी जिसने मुगलों सहित बाद के शासकों को प्रभावित किया।